मज़हबी कट्टरता के खिलाफ़ औरतों की आवाज़

कमला भसीन

पिछले कुछ महीनों से देश में जगह-जगह डर और घृणा फैलाई जा रही है। मंदिर और मस्जिद के नाम पर पड़ोसियों को, देशवासियों को बांटा जा रहा है। बहुत से शहरों और गांवों में तो घरों और दुकानों को आग लगाई गई है, लोगों की हत्याएं हुई हैं, दंगे भड़के हैं।

भगवान के नाम पर ये दंगे क्या अनपढ़, अनजान लोग फैला रहे हैं? क्या ये दंगे आम हिंदु और मुसलमान कर रहे हैं? क्या धार्मिक नेता भगवान के नाम पर झगड़ रहे हैं? नहीं। ये दंगे पढ़े-लिखे, जाने-माने नेता भड़का रहे हैं। राजनैतिक नेता धर्मों की लड़ाई में आगे हैं। वही रथ चला रहे हैं।

इस रथ-यात्रा पर करोड़ों रुपये ख़र्च हुए हैं। फिर इस रथ यात्रा को रोकने पर, कानून बनाए रखने पर और करोड़ों रुपये ख़र्च हुए हैं। दंगों में करोड़ों रुपयों की संपत्ती जलाई गई है। इस सब से छोटे-बड़े काम-धंधों का भी नुकसान हुआ है। मंहगाई और बढ़ेगी और मारे जाएंगे ग़रीब लोग।

बड़े व्यापारियों का तो फ़ायदा होगा। ज़्यादा चोट ग़रीब औरतों पर होगी जो घर चलाती हैं, बच्चे पालती हैं।

हमारा मानना है कि ये मंदिर मस्जिद के झगड़े नेता लोग वोटों के लिये करवा रहे हैं। खुद सत्ता में बने रहने के लिए करवा रहे हैं। इन नेताओं को न तो देश की फ़िक्र है, न ग़रीबों की। उन्हें सिर्फ़ अपनी कुर्सी की फ़िक्र है।

अगर ग़रीबों की फिक्र होती तो ये नेता ग़रीबी मिटाने के लिए रथ चलाते, गांवों में साफ पानी पहुंचाने के लिए रथ चलाते, चारा और लकड़ी के लिए रथ चलाते, लोगों को साक्षर करने के लिए, उन्हें दवा पहुंचाने के लिए रथ चलाते मंदिर बन जाने से ग़रीबों को क्या फ़ायदा होगा? भगवान लोगों के दिलों में रहता है या आलीशान मंदिरों में? जहां करोड़ों भूखे मर रहे हैं वहां मंदिर पर करोड़ों रुपये लगाना ठीक है क्या?

गांधी जी कहते थे, "ईश्वर अल्लाह तेरे नाम।" तो फिर ईश्वर और अल्लाह पास पास या एक ही घर में क्यों नहीं रह सकते! नेता तो ईश्वर और अल्लाह, राम, रहीम, गुरू नानक को भी लड़वा रहे हैं। ऐसे नेताओं की बातों में अगर हम आ गए तो हर गांव, हर शहर और ये पूरा देश बंट जाएगा। हमारा शांति से रहना मुश्किल हो जाएगा।

अभी एक हफ्ता पहले दिल्ली की कुछ औरतों ने इस हिंसा और धार्मिक कट्टरपन के खिलाफ अपनी आवाज उठाने की सोची। हम लोगों को और नेताओं को कहना चाहते थे कि हम औरतें शांति के लिए लड़ेंगी। अपनीं बात हज़ारों लोगों तक पहुंचाने के लिए हमने तय किया कि हम दिल्ली के इंडिया गेट के पास *धरना* देंगी। धरना, जुलूस, प्रदर्शन भी अपनी बात लोगों तक पहुंचाने का एक अच्छा तरीक़ा है।

हम 29 अक्टूबर को सुबह नौ बजे से शाम के सात बजे तक इंडिया गेट पर रहीं। हम क़रीब दो सौ औरतें थीं। इंडिया गेट के पास एक चौराहे पर एक बड़ा गोल चक्कर है। हमने उस गोल चक्कर में चार बड़े-बड़े बैनर लगाए। (कपड़े पर अपनी बात, नारा या अपने संगठन का नाम लिखते हैं तो यह *बैनर* कहलाता है। बैनर भी एक अच्छा प्रचार माध्यम है)। हमारे बैनर पर लिखा था "मज़हबी कट्टरता के ख़िलाफ औरतों की आवाज"। आते-जाते हज़ारों लोगों ने हमारे बैनर देखे। हम ने इस दिन नारे नहीं लगाए। मौन रह कर अपनी बात कहने का तय किया। दो-दो औरतों ने सफ़ेद साड़ियां अपने हाथों में पकड़ीं। क़रीब तीस सफ़ेद साड़ियों से ऐसे प्रदर्शन करते रहे। सफ़ेद रंग शांति का रंग माना जाता है। हम चुपचाप सब को कह रहे थे कि हमें शांति चाहिए।

अपनी पूरी बात लोगों तक पहुंचाने के लिए हमने एक पर्चा भी छापा। यह पर्चा हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी में था। 8000 पर्चे हमने उस दिन बांटे।

दिन में पेड़ों के नीचे बैठकर हमने गाने गाए, धर्म के नाम पर किए जाने वाले झगड़ों के खिलाफ नाटक खेले। यानि अलग अलग तरीकों से हमने अपनी बात हजारों लोगों तक पहुंचाई।

चुप रहने से अब काम नहीं चलेगा। हिंसा और सांप्रदायिकता का विरोध करना ज़रूरी है। जो लोग लोगों में बैर फैलाते हैं उनका विरोध करना ज़रूरी है। स्वार्थी नेताओं के पीछे अगर लोग नहीं रहेंगे तो स्वार्थी नेता अपने आप ख़त्म हो जाएंगे।

हम 'सबला' में अपना पर्चा छाप रहे हैं ताकि आप को भी पता लगे कि हम औरतें दिल्ली की सड़कों पर क्या कह रही थीं। अगर हर घर, हर बस्ती, हर गांव, हर शहर से शांति, आपसी प्रेम और सद्भाव के लिए आवाज़ उठ जाए तो क्या मज़ाल है हिंदुस्तान बंट जाए। □